

प्रेस नोट

भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अनु.सं., नई दिल्ली के 63वें दीक्षांत समारोह में प्रोफेसरों द्वारा वर्ष 2024 की महत्वपूर्ण शैक्षणिक उपलब्धियों पर प्रस्तुतियां एवं XXVIII हूकर पुरस्कार व्याख्यान दिनांक

20.03.2025

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के 63वें दीक्षांत सप्ताह (दिनांक 17-22 मार्च, 2025) के चौथे दिन की गतिविधियां दिनांक 20 मार्च 2025 को जारी रहीं। सत्रों का संचालन प्रो. डॉ. मोनिका जोशी बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संभाग और सह-संचालन डॉ. श्रुति सेठी, प्रधान वैज्ञानिक (खाद्य विज्ञान एवं फसलोत्तर प्रौद्योगिकी संभाग), भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अनु.सं. द्वारा किया गया। संस्थान की संयुक्त निदेशक (शिक्षा) एवं डीन, डॉ. अनुपमा सिंह ने सभी विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया और विभिन्न सत्रों के सम्माननीय अध्यक्षों का परिचय कराया। इनमें बागवानी विज्ञान सत्र की अध्यक्षता डॉ. एस. उमा, पूर्व निदेशक, आईसीएआर- राष्ट्रीय केला अनुसंधान, तिरुचिरापल्ली (तमिलनाडु) ने की, जबकि सामाजिक विज्ञान सत्र की अध्यक्षता डॉ. एन.पी. सिंह, पूर्व सदस्य (अधिकारिक), सीएसीपी, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ने की। सत्र की शुरुआत वर्ष 2024 की महत्वपूर्ण शैक्षणिक उपलब्धियों पर संबंधित संकायों के प्रोफेसरों द्वारा प्रस्तुतियों के साथ हुई।

बागवानी विज्ञान स्कूल में, जिसमें पुष्पविज्ञान एवं भू-दृश्य, फल विज्ञान, शाकीय विज्ञान और फसलोत्तर प्रबंधन शामिल है; शोधकर्ताओं ने जलवायु-समर्थित फूलों की किस्में, उच्च उपज देने वाली फल एवं सब्जी की प्रजातियाँ और उन्नत पश्चात फसल तकनीकों का विकास किया है। ये तकनीकें खराब होने वाले कृषि उत्पादों के नुकसान को कम करने और उनकी शेल्फ लाइफ बढ़ाने में सहायक होंगी। इन नवाचारों से किसानों की आय में वृद्धि होगी तथा खाद्य एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

सामाजिक विज्ञान संकाय में, कृषि प्रसार, कृषि अर्थशास्त्र और जैवसूचना विज्ञान में किए गए महत्वपूर्ण शोध नीतिगत संस्तुतियों और तकनीकी हस्तक्षेपों को दिशा दे रहे हैं। किसानों में ज्ञान प्रसार, मार्केट इन्टेलिजन्स और डिजिटल प्रसार मॉडलों पर किए गए अध्ययन ग्रामीण आजीविका को सशक्त बना रहे हैं। कृषि में महिलाओं के सशक्तिकरण और ज्ञान मध्यस्थ के रूप में प्रगतिशील किसानों की भूमिका पर किए गए शोध भविष्य के कृषि विस्तार कार्यक्रमों को प्रभावित कर रहे हैं।

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने अपने 63वें दीक्षांत सप्ताह के अंतर्गत XXVIII हूकर पुरस्कार व्याख्यान का आयोजन किया। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. तिलक राज शर्मा, भा.कृ.अनु.प. राष्ट्रीय प्रोफेसर (बी.पी. पाल चेयर) एवं पूर्व उप महानिदेशक (फसल विज्ञान), भा.कृ.अनु.प.ने की, जबकि स्वागत भाषण डॉ. सीएच. श्रीनिवास राव, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अनु.सं. ने दिया। 2022-2023 द्विवार्षिक प्रतिष्ठित हूकर पुरस्कार को डॉ. ज्ञान प्रकाश मिश्रा, अध्यक्ष, बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संभाग, भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अनु.सं. को प्रदान किया गया। यह सम्मान उन्हें फसल सुधार, बीज विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी में असाधारण योगदान के लिए दिया गया।

डॉ. मिश्रा ने कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है, जिसमें उन्होंने 13 फसल की किस्मों का विकास किया है, जिनमें 5 मसूर, 1 मूंग, 6 भिंडी (एक संकर सहित) और 1 फ्रेंच बीन शामिल है। उनके अनुवांशिक मानचित्रण और चिह्न-सहायित प्रजनन (मार्कर-असिस्टेड ब्रीडिंग) में किए गए नवाचारों ने फसलों में जल्दी

पकने, बीज के आकार और रोग प्रतिरोधक क्षमता जैसे आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण गुणों में सुधार को संभव बनाया है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने मूंगफली और आलू में 5 ट्रांसजेनिक किस्मों का विकास किया है, जो प्रमुख जैविक और अजैविक तनावों से निपटने में सहायक हैं। डॉ. मिश्रा की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि भारत की पहली राष्ट्रीय स्थायी हिमनदी-आधारित जर्मप्लाज्म भंडारण सुविधा (National Permafrost-Based Germplasm Storage Facility) की चांग-ला, लद्दाख में स्थापना की है, जो महत्वपूर्ण फसल जर्मप्लाज्म के दीर्घकालिक संरक्षण को सुनिश्चित करती है। उन्होंने बीज प्रौद्योगिकी नवाचारों में भी योगदान दिया है, जिसमें 'टाइनीफील्ड्स'—एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर माइक्रोग्रीन किट और 'स्पीडीसीड'—एक त्वरित बीज व्यवहार्यता परीक्षण किट का व्यावसायीकरण शामिल है। उनके इन प्रयासों ने भारत के बीज उद्योग को सुदृढ़ किया है और वैश्विक खाद्य सुरक्षा में योगदान दिया है। कार्यक्रम का समापन डॉ. टी.आर. शर्मा के समापन उद्बोधन के साथ हुआ, जिसके पश्चात डॉ. अनुपमा सिंह, संयुक्त निदेशक (शिक्षा) एवं डीन, भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अनु.सं. ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

सौजन्य
भा.कृ.अनु.सं- मीडिया सेल, नई दिल्ली